thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य वन्दना

ओ३म्

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

युग प्रवर्तक
ऋषिवर दयानन्द सरस्वती

जो मनुष्य देश–देशान्तर और द्वीपद्वीपान्तर में जाने आने में शंका नहीं करते वे देशान्तर के अनेकविध मनुष्यों के समागम, रीति भांति देखने, अपना राज्य और व्यवहार बढ़ाने से निर्भय शूरवीर होने लगते और अच्छे व्यवहार का ग्रहण बुरी आदतों के छोड़ने में तत्पर होके बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं। भला जो महाभ्रष्ट म्लेच्छकुलोत्पन्न वेश्या आदि कि समागम में आचारभ्रष्ट धर्महीन नहीं होते किन्तु देशदेशान्तर के उत्तम पुरूषों के साथ समागम में छूत और दोष मानते हैं!!! वह केवल मूर्खता की बात नहीं तो क्या है ? हां इतना कारण तो है कि जो लोग मांस भक्षण और मद्यपान करते हैं उनके शरीर और वीर्यादि धातु भी दुर्गन्धादि से दूषित होते हैं। इसलिए उनके संग करने से आर्यों को भी ये कुलक्षण न लग जाएं यह तो ठीक है। परन्तु जब उनसे व्यवहार और गुणग्रहण करने में कोई भी दोष व पाप नहीं है किन्तु इनके मद्यपानादि दोषों को छोड़ गुणों को ग्रहण करें तो कुछ भी हानि नहीं। जब इनके स्पर्श और देखने से भी मूर्ख जन पाप गिनते हैं इसी से उनसे युद्ध कभी नहीं कर सकते क्योंकि युद्ध में उनको देखना और स्पर्श होना अवश्य है।

सज्जन लोगों को राग, द्वेष, अन्याय, मिथ्याभाषणादि दोषों को छोड़ निर्वैर प्रीति परोपकार सज्जनतादि का धारण करना उत्तम आचार है। और यह भी समझ लें कि धर्म हमारे आत्मा और कर्तव्य के साथ है। जब हम अच्छे काम करते हैं तो हमको देशदेशान्तर और द्वीपद्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोषा नहीं लग सकता। दोष तो पाप करने में लगते हैं।

–सत्यार्थ प्रकाश

आदर्शजन संसार में इतने कहां पर हैं हुए ?
सत्कार्य भूषण आर्यगण जितने यहां पर हैं हुए।
गौतम, वशिष्ठ समान मुनिवर ज्ञानदायक थे यहां।
मुनि याज्ञवल्कय समान सत्तम विधि विधायक थे यहां।
बाल्मिकी–वेद–व्यास से गुण–ज्ञान गायक थे यहां,
पृथु, पुरू, भरत रघु से आलौकिक लोक नायक थे यहां।

–गुप्त जी

यह अंक आर्य वन्दना कोष से प्रकाशित किया गया तथा
आगामी अंक आर्य समाज मण्डी के सहयोग से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ८७वां विक्रमी सम्वत् २०७१ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११५ नवम्बर २०१४

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

''निमन्त्रण''

तेहरवाँ वार्षिक उत्सव गांव मकेहड़

इस समारोह में आर्य जगत् के प्रख्यात वेदों के प्रकान्ड विद्वान् स्वामी सन्तोषानन्द जी महाराज, दयानन्द मठ घन्डरां, भजनोपदेशक श्री कुलदीप सिंह विद्यार्थी एवं उनके सहयोगी बिजनौर तथा अन्य विद्वान् भी अपने ओजस्वीवक्तव्य तथा मधुर संगीत द्वारा वेद प्रचार करेंगे। अतः निवेदन है कि निम्न कार्यक्रमानुसार सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधार कर पुण्य के भागी बने।

श्रीमती नीलां आर्या एवं
ठाकुर बीरी सिंह आर्य

आयोजक :

श्री बीरी सिंह आर्य भजनोपदेशक एवं धर्म पत्नी नीलां देवी आर्या,
गांव मकेहड़, डा. चोलथरा, तह. सरकाघाट, जिला मण्डी (हि.प्र.)

''विस्तृत कार्यक्रम''

७–८–९ नवम्बर २०१४

प्रातः गायत्री महायज्ञ व भजन.....०७ से १० बजे तक
भजन प्रवचन दोपहर.....१२ से ०४ बजे तक
भजन प्रवचन रात्रि.....०७ से ०९ बजे तक

१० नवम्बर २०१४

परायण यज्ञ पूर्णाहुति आशीर्वाद भजन प्रवचन प्रातः.....०९ से ०३ बजे तक

''ऋषिलंगर ०३ बजे सांयकाल पर्यन्त''

स्थान :– यह समारोह हर वर्ष की भांति व्यक्तिगत अपने घर गांव मकेहड़ में बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है।

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मोबाइल : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, संरक्षक, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, संरक्षक एवं विशेष सलाहकार, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 090348–17118, 094669–55433, 01733–220260
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: 1. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मोबाइल : 98161–25501 2. माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

'अहिंसा परमोधर्मः' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' हमारी सभ्यता और संस्कृति के आदिकाल से प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। हमारे ऋषियों द्वारा सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया की विचारधारा की सुन्दर वचनों की गंगोत्री प्रवाहित की जाती रही है। हमें अपने पूर्वजों पर सदा से गर्व रहा है। अनेक अहिंसक, सार्थक और सत्य से पूरित वचन हमारा सदा से मार्ग दर्शन करते आये हैं। वेद शास्त्र ऋषियों ने मनुष्य को भोजन करने से पूर्व कौए, चिडियों व मकोड़ों को एक हिस्सा अलग रखने की प्रेरणा दी है। उसे खाना खाने के उपरांत उन पशु, पक्षियों को विधिवत सौंपते आए हैं। हमारे पूर्वज शांति, मंगल व कल्याण का सदैव संदेश लेकर भूमंडल में जाते और वेदों का डंका बजाया करते थे। उनके सम्बध में सुप्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है :

उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है,
गाते नहीं उन्हीं के गुण हम, गा रहा संसार है।
वे धर्म पर करते न्यौच्छावर तृण समान शरीर थे,
उनसे वही गम्भीर थे, वरवीर थे, ध्रुववीर थे।

आज के वैज्ञानिक युग में यद्यपि मनुष्य ने बहुत कुछ पा लिया है। लेकिन अभी भी मनुष्य मनुष्य नहीं बन सका। वह स्वार्थों के दलदल में इतना फंस जाता है कि परिवार की चिन्ता ही उसके लिए सर्वोपरि होती है। वह अपने व अपने परिवार की स्वार्थ सिद्धि के लिए अधर्म, कुकर्म कर बैठता है। फिर भी उसकी तृष्णा की तृप्ति नहीं होती। कविवर हरिकृष्ण प्रेमी ने पंखी की पीड़ा के अन्तिम पद्यांश मैं लिखा है :

जब से स्वार्थ घूंसा प्राणों में हिंसा नस–नस में है समाई
आज भाई के खून का प्यासा दिखाई देता भाई
आज स्वजन ही गला काटते किससे बचकर चलें यहां पर
सभी ओर तलवार तन रही किससे बचकर चलें यहां पर
नित्य नये शस्त्र बन रहे हैं भयभीत सभ्यता सारी।
पंखी आज तुम ही क्या आज विश्व पर विपदा भारी

अहिंसा, सत्य सदाचार ये हमारे सदा से भूषण रहे हैं। आज का मानव इतना निर्दयी बन गया है कि उसे हिंसा से अधिक चाव एवं लगाव होता है। जो हमें दया और धर्म से दूर ले जाने वाले कृत्य हैं। मानव को कभी भी, किसी भी परिस्थिति में हिंसा का सहारा नहीं लेना चाहिए। जहाँ तक संभव हो अहिंसात्मक ढ़ंग से अपनी बातों का प्रचार–प्रसार करना चाहिए। गुरू गोबिन्द सिंह ने प्रभु प्राप्ति का सच्चा धर्म और श्रेष्ठ कर्म प्रेम कहा है। गुरू जी लिखते हैं :

सांचे कहु सुनिलेहुं सभी, जिन प्रेम किया तिन ही प्रभु पायो

दयालुता मनुष्य का आभूषण है। इसे कभी भी मनुष्य को अपने से दूर नहीं करना चाहिए। दयालुता के शुद्ध सरोवर में ही श्रेष्ठ कमल खिलते हैं। जो मानव ह्रदय को मोद बुद्धि का संतोष देते हैं। देवी देवताओं के नाम पर लोग हिंसक हो जाते हैं और देवी देवताओं के नाम पर अत्याचार करने, जीव हत्या करने में तनिक भी नहीं शर्माते। भेड–बकरी, गाय–भैंसें आदि पशु को काटना मानव की क्रूरत्तम प्रकृति एवं प्रवृति का अर्थ है। मानव का सबसे बड़ा धर्म, कर्म, जीवन का मर्म जीव सेवा एवं परोपकार में ही है। दीन–दुखियों, दलितों व असहाय पशु–पक्षियों की क्रूरतापूर्वक बलि देना अपने जीवन का सर्वनाश करने के बराबर है। भारत के उच्च न्यायालय ने देवी–देवताओं के नाम पर पशु बलि देने को निषेध कर दिया है, जो न्यायालय द्वारा सौभाग्य, सराहनीय, स्वस्थ निर्णय है। भारत की समस्त जनता को इस निर्णय की मुक्त कंठ से प्रशंसा करनी चाहिए और हमें दंभी, छली, कपटी और स्वार्थी लोगों से दूर रहकर उनकी मनोवृति का पर्दाफाश करना चाहिए। यही जीवन का सच्चा कर्म, मर्म व धर्म है। हिमाचल प्रदेश मन्त्रिमण्डल ने भी मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्र की अध्यक्षता में लिए एक सर्व सम्मत निर्णय में हिमाचल प्रदेश की देव भूमि से पशु बलि और अन्य किसी हिंसा पर रोक लगा दी है जो प्रदेश सरकार का प्रशंसनीय निर्णय है। वेदों में जीवों पर दया करने की बार–बार बातें दोहराई गई हैं। बलि वैशवों देव यज्ञ में अहिंसा परमो धर्मः की बात बार–बार दोहराई गई। भोजन करने से पूर्व हमारे पूर्वज गौ, चींटी तथा मकौड़ी आदि पर दया दृष्टि की वृष्टि उनके भोजन का भाग अलग रख देते थे। जो दया, धर्म, परोपकार तथा अहिंसा का जीवनव्रत का प्रत्येक चिन्ह माने जाते थे। महान् सामाज सुधारक भक्त कालीन सन्त शिरोमणि कबीरदास जी कहते हैं :–

बकरी पाते खाती है ताकि काढ़ी खाल,
जो नर बकरी खात है तिनको कौन हवाल।

अपने पेट को जिव्हा के तनिक स्वाद के लिए शमशान भूमि बना देना तनिक भी न्याय संगत नही है। हमारे शास्त्रों में तो हिंसक पशुओं को मार देने के उपरान्त उन्हें दबाने की बात कही ताकि मनुष्य के विनम्र स्वभाव में क्रूरता की तनिक भी स्वर लहरी भाषित न हो।

अहिंसा परमो धर्मः की मंगलमय विचारधारा का हमें सुबह–शाम, सोते–जागते और उठते–बैठते प्रचार–प्रसार करते रहना चाहिए। तभी हम मानव जीवन की सार्थकता को सिद्ध कर सकते हैं। आज मानव बारूद के ढेर पर बैठा हुआ है। विश्व में सात अरब मनुष्यों के खाने के लिए भले ही भर पेट भोजन न मिले लेकिन वैज्ञानिकों द्वारा इतना बारूद तैयार कर रखा कि प्रत्येक व्यक्ति के भाग में १ क्विंटल

thearyasamaj.org

से अधिक बारूद उपलब्ध है। इससे मानवता का नाश–विनाश और सर्वनाश होने से विधाता भी रोक नहीं सकता। मनुष्य के दुखों का कारण स्वयं मनुष्य ही है। यदि वह हिंसक और क्रूर विचारों को तिलांजलि नहीं देता तो केवल मात्र एक बटन दबाने से सम्पूर्ण विश्व के जीव या प्राणी को राख की ढ़ेरी में समा जाऐंगे और उस जगत् जननी माँ को नये सिरे से इस सृष्टि का सृजन करना होगा और पुनः हम पाषाण युग में चले जाऐंगे।

राम–कृष्ण और ऋषि–मुनियों की भूमि भारत की इस दुर्दशा का मार्मिक चित्रण श्री गुप्त जी कुछ इस प्रकार किया है :

हम क्या थे, क्या हैं, क्या होंगे अभी,
आओ मिलकर बिचारें ये समस्याएं सभी।

राम–कृष्ण और ऋषि–मुनियों की पावन भूमि जहाँ राक्षसों का संहार और भक्तों का उद्धार करती थी उस देश की संतानों का चिड़ीमार बनना दिल को दहला देता है। देवी–देवताओं ने अब अपने उत्सवों में पशु बलि को निषेध कर दिया जो एक सुन्दर प्रयास है हम सभी ईश्वर से भी कवि के शब्दों में यही प्रार्थना करते हैं :

मानस भवन में आर्य जन जिसकी उतारें आरती
भगवान भारत वर्ष में गूंजे हमारी भारती।।

–कृष्ण चन्द आर्य

वेद का संदेश

♦महेन्द्र आर्य, मुम्बई

ओं जिह्वाया अग्रे मधु मे, जिह्वामूले मधूलकम्।
ममेदह ऋतावसो मम चित्तमुपायसि।।

ओं मधुमत् मे निष्क्रमणं मधुमत् मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः।।

अथर्व.–१.३७.२.३

There be honey at the tip of my tongue, abundance of honey at the root of my tongue, honey in my behaviour and my dealings, come and stay O honey in my heart.

My leaving the home should be with sweetness, my coming home should be sweet too, and I become as sweet as honey itself in my behaviour.

मीठा बोलूं, मीठा बोलूं,
जब भी बोलूं, मीठा बोलूं।।

जिह्वा पे हो मेरे मधु कण,
मीठा बोले वाणी हर क्षण।

मीठा हो हर काम मेरा,
प्रभु मन में मिश्री घोलूं।।

घर से निकलूं मीठा कह कर,
घर फिर लौटूं मीठा कहते।

इतना मीठा जीवन हो कि,
मैं मधु जैसा हो लूं।।

नेकी के झण्डे गाड़ गये

♦शास्त्री विद्यानिधि आर्य

सादा जीवन उच्च विचार,
आगे ही आगे बढ़ते चले।
मितभाषी सुघड़ बाग्मिता,
खादी पहने जचते थे भले।।
नीवीं दृष्ट दूर की सोच,
मंज़िल की ओर बढ़ते रहे।
हर कदम पे कठिन परीक्षा,
मुख से आह! तक न कहे।।
सद् गृहस्थी आत्म संयमी,
मुनियों जैसा जीवन जिये।
भेद न समझा निज, पराये में,
निष्काम भाव से कर्म किये।।
विद्याधन ही सर्वोपरि समझ,
सर्वस्व इसी पर बार गये।
डाक्टर, मास्टर कर्नल, राजनेता,
तेरी गाथा हर कोई कहे।।
लोकोपकार लक्ष्य था जीवन का,
ऋषियों सम थे विचारवान।
प. लेखराम, म. हंसराज के प्रतिरूप,
थे दिवंगत मास्टर गोबिन्दराम।।
समाज में अलग ही पहचान रखते,
हर जन–मन में बस गये।
आपके उपकारों को वही जानें,
जो गिरते–गिरते सम्भल गये।।
कौन रहा सदा जगत में,
राजा रंक काल–गाल में समा गये।
पर जाना तो उसी का भला,
'निधि' नेकी के झण्डे गाड़ गये।।

thearyasamaj.org

शिखा (सिर की चोटी)

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

शिखर से ही शिखा शब्द निकला है। पर्वत की चोटी को ही शिखर कहते हैं। सिर के पिछले भाग के शिखर पर शिखा होती है या यूं कहें कि शिखा का स्थान है। चूड़ा कर्म संस्कार में सिर के सारे बाल काट दिये जाते हैं क्योंकि वे बाल मलिन माने जाते हैं। सिर के मध्य भाग के केशों के समूह को ही चूड़ा कहा जाता है। उस संस्कार का नाम इसी आधार पर चूड़ कर्म रखा गया क्योंकि इसमें चूड़ा छेदन किया जाता है। परन्तु उपनयन, वेदारम्भ संस्कारों में तथा चूड़ा कर्म के पश्चात सिर के बाल काटने पर शिखा रखने का विधान है। वैदिक धर्म में यज्ञोपवीत तथा शिखा रखने का बराबर का महत्व रहा। शिखा हिन्दुत्व या आर्यों की पहचान मानी जाती रही। औरंगज़ेब के विरूद्ध गुरू तेग बहादुर के पास यही शिकायत लेकर, काश्मीर के ब्राह्मण आये थे, कि हिन्दुओं की चोटियाँ काटकर तथा जनेऊ जलाकर सम्राट के सिपाही धर्म परिवर्तन करवा रहे हैं। इसी से पता चलता है कि इन दोनों को हिन्दु कितना महत्व देते थे।

वेद और योग दर्शन के सिद्धांत के अनुसार शिखा वाले भाग के नीचे ब्रह्म रन्धर होता है। इस ब्रह्म रन्धर के ऊपर सहस्र दल का स्थान है। स्वाध्याय तथा विधि अनुसार किये गये अनुष्ठानों से उत्पन्न ऊर्जा ब्रह्मदल की ओर बढ़ती है जिसे बाहर जाने से शिखा रोकती है तथा शरीर में विनियोजित करती है। इससे आयु, बल, तेज़ और पराक्रम बढ़ते हैं। अन्यथा नख और केश मृत कोशिकायें हैं जिनका काटना लाभकारी रहता है।

वास्तव में शिखा सामाजिक तथा धार्मिक आदर्शों और सिद्धांतों के अंकुश का कार्य करती थी। हर शिखा रखने वाले से ऊंचे आदर्शों के अनुपालन की आशा की जाती थी। परन्तु अधुनिकता की दौड़ में तथा शिखा के महत्व की जानकारी के अभाव में चोटी (शिखा) सिरों से लुप्त होती गई। कुछ गंजों के सिर का तर्क देकर शिखा न रखने का बहाना ढूंढते रहे। परन्तु उन्नीसवीं शताब्दि के मध्य तक हिन्दु चोटी रखना अनिवार्य समझते थे।

पूजा पाठ में बैठने पर सर्व प्रथम कार्य शिखा में गांठ बांधने का होता है। यह पूजा का विधान है। ध्यान, धारणा और समाधि से मस्तिष्क में संकलित ऊर्जा तरंगें चोटी के कारण बाहर नहीं निकल पाती हैं। इस ऊर्जा का अन्तः मुख हो जाने से मानसिक शक्तियों का पोषण होता है। जिससे शरीर की शक्तियाँ बढ़ती हैं। शारीरिक शक्तियाँ बढ़ने से अवसाद से बचाव होता है, नेत्र ज्योति तथा कार्य कुशलता बढ़ती है। इन सबके बढ़ने से मनुष्य के व्यक्तित्व में निखार आता है। यजुर्वेद में शिखा को ब्रह्मयोनि कहा गया है। ब्रह्म रंधर के माध्यम से इन्द्रियों को ऊर्जा मिलती है। आत्म साक्षात्कार का माध्यम सुषम्णा है। सुषम्णा नाड़ी अपान मार्ग से मस्तिष्क तक पहुँचती है और ब्रह्म रंधर में विलीन हो जाती है।

सर्दियों में डॉक्टर प्रायः सिर को ढांकने के लिये कहते है या टोपी या पगड़ी लगाने के लिये कहते हैं। ब्रह्मरंधर मस्तिष्क का सब से ठण्डा भाग है। शिखा इसे और ठण्डा होने से बचाती है। केश छेदन पर शिखा अवश्य रखी जाती थी या सारे केश रखे जाते थे। शिखा हिन्दुत्व का केवल चिन्ह मात्र नहीं है अपितु इसका उपयोगी वैज्ञानिक आधार है। कई बार चोटी की गांठ खोलकर प्रतिज्ञा भी ली जाती थी। चाणक्य ने शिखा की गांठ खोलकर प्रतिज्ञा ली थी कि जब तक नन्दवंश एवं राज्य का समूल नाश नहीं कर देगा, शिखा में गांठ नहीं बांधेगा।

इतिहास से

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, यमुनानगर (हरियाणा)

समय के इस बन्द कमरे में
जन्म ले चुकी हैं–
कुरीतियाँ, कुनीतियाँ, अन्धविश्वास।
इसमें उगी हैं–
अन्ध परम्पराएँ व नपुंसक कृतियाँ।
इसमें पनपे हैं–
स्वार्थ, षड्यन्त्र और विवाद
जड़ता के तर्कहीन संवाद।
पर तुम्हें चाहिए
ओ मेरे इतिहास!
आकाश का फैलाव
आदर्शों का अन्तहीन विस्तार
जो चेतना की महायात्रा
व व्यक्ति से व्यक्ति तक,
द्वार से द्वार तक,
नगर से नगर तक,
एक युग से दूसरे युग तक की
शाश्वत गति का चेतन सन्दर्भ बने।
ओ मेरे इतिहास!
श्रुतियों का आलोक चाहिए तुम्हें,
जो मेरे दुराग्रही पूर्वजों की नपुंसक कृतियों को
बदल दे फिर आर्ष ग्रन्थों में।

thearyasamaj.org

परमात्मा सर्वोत्तम प्रबन्धक है

♦कन्हैयालाल आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा (हरियाणा)

आधुनिक युग प्रबन्धकों का युग है। एक से बढ़कर एक प्रबन्धन की चर्चा आये दिन होती रहती है, परन्तु मैं संसार के आधुनिक प्रबन्धकों को यह बताना चाहूँगा कि सबसे बड़ा प्रबन्धक परमपिता परमात्मा है। उसने प्रकृति की प्रत्येक कृति का जिस तरह प्रबन्धन किया है, वह तो हमारी समझ की सीमा से भी परे है।

आइये, हम सबसे पहले अपने शरीर की रचना पर विचार करें। परमात्मा ने शरीर के एक–एक अंग की जिस प्रकार रचना की है, उसे देखकर मानव बुद्धि चकरा जाती है। चाहे नेत्र–रचना हो, हृदय की धड़कन हो, बिना कब्जे के एक–एक हड्डी को दूसरी हड्डी के साथ किस प्रकार जोड़ा है। एक व्यक्ति के गले की आवाज दूसरे से नहीं मिलती, एक व्यक्ति की अंगुलियों के चिन्ह दूसरे व्यक्ति की अंगुलियों के चिन्हों से नहीं मिलते, एक व्यक्ति का स्वभाव दूसरे व्यक्ति से नहीं मिलता। किस–किस बात की चर्चा की जाए, हर बात ही उसकी निराली है। एक जीवात्मा के गुण–कर्म–स्वभाव दूसरे जीवात्मा से नहीं मिलते। इससे बड़ी उसकी विचित्रता और प्रबन्ध–व्यवस्था क्या हो सकती है ? विशेष बात यह है कि बड़े से बड़े शरीर–वैज्ञानिक उसकी रचना और व्यवस्था को पूरी तरह समझ नहीं पाये हैं।

आइये, अब कुछ फलों की चर्चा करते हैं। केला एक ऐसा फल है जिसको ढकने के लिए प्रभु ने एक खोल दिया है। प्रभु जानता है कि मेरे पुत्र एवं पुत्री को जब हलवा खाने की आवश्यकता हो तो वह हलवा बाहर की धूल मिट्टी से बच कर रहे, इसीलिए उस पर एक खोल बना दिया। संतरे को लें, संतरे के बाहर एक छिलका लगा दिया। इतना ही नहीं, छिलके के अन्दर सन्तरे के रस के लिए कई प्रकार के छोटे–बड़े डिब्बे बना दिये और उसमें संतरे के रस को रख दिया। इतना ही नहीं परमात्मा ने विचारा कि मेरा भक्त संतरे को पुनः खायेगा तो बोने के लिए उसका बीज उसके अन्दर रख दिया। अनार को लीजिये। अनार के बाहर खोल बनाया। अन्दर कई प्रकार के छोटे–छोटे विभाग बनाये। विभागों में फिर कई प्रकार के उपविभाग बना दिये। फिर जाकर कहीं दाने डाले और दानों में भी प्रत्येक दाने में एक छोटी सी गुठली उसको सुरक्षित रखने के लिए डाल दी। हे प्रभु! तेरी रचना और उसका प्रबन्धन देखकर मानव बुद्धि चकरा जाती है।

मुझे एक बार किसी कार्यक्रम में हरिद्वार जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। किसी परिवार में जा कर ठहरा। जब प्रातःकाल हम नाश्ते के लिये बैठे थे, तो गृहस्थ परिवार मुझसे पूछने लगा–पण्डित जी! आप पपीता खाओगे ? हमारे पपीते का एक पेड़ है, वहां दो पपीता प्रतिदिन पक जाते हैं। मैंने उनसे प्रश्न किया कि एक मौसम में कितने पपीते लग जाते हैं ? तो उन्होंने बताया कि लगभग ४० से ५० पपीते एक मौसम में लग जाते हैं। मैंने उनसे कहा कि प्रतिदिन केवल एक या दो पपीते ही क्यों पकते हैं ? एक साथ क्यों नहीं पकते ? उन्होंने जो उत्तर दिया वह मेरी शंका का समाधान था। वह कहने लगे, पण्डित जी! परमपिता परमात्मा बड़ा ही दयालु है। वह सोचता है कि यदि मैं सारे के सारे पपीते एक बार में पका दूँ, तो मेरे पुत्र और पुत्रियाँ उन सभी को एक साथ नहीं खा पायेंगे या तो वे बेचने पड़ेंगे या वे गल जायेंगे। इसीलिए परमात्मा ने ऐसी व्यवस्था कर दी है कि मेरी सन्तान को यह अमृत–फल मैं प्रतिदिन दूँ। इसीलिए प्रतिदिन एक या दो पपीतों को ही पकाता है। उसकी व्यवस्था में कहीं भी दोष नहीं, वह एक उत्तम प्रबन्धक है। उसकी प्रत्येक व्यवस्था बुद्धिपूर्वक है और प्राणियों के हित के लिए है। ऐसे उत्तम प्रबन्धक को हम शत–शत नमन करते हैं।

इसी प्रकार गेहूँ, चावल, जौ, चना आदि के पकने की व्यवस्था उससे अलग कर दी। यदि पपीते की तरह प्रतिदिन एक या दो दाने पकाता, तो जो पहले पक जाता, वह अंतिम दाने के पकने की प्रतीक्षा करता, इससे सबसे पहले पकने वाला दाना या तो गिर कर धूल में मिल जाता या गल जाता। अन्तिम पकने वाला दाना तो कच्चा रह जाता। इस प्रकार कुछ कच्चे–कुछ पक्के दाने मिलते, जिससे हम उनका उपयोग ठीक ढंग से न कर पाते। इसीलिए अन्नों के सारे दानों को एक साथ पकाया, क्योंकि उनका उपयोग एक साथ ही होता है।

विचार करें कि हमें पानी को इकट्ठा रखने के लिए टंकी की आवश्यकता होती है। टंकी से हम अपने प्रत्येक कमरे में उस जल को ले जाते हैं। सोचें, प्रभु के पास कितनी बड़ी टंकी होगी, कहाँ वह सम्भाल कर रखता होगा ? हमारी पानी की टंकी में यदि कीट–पतंग या कचरा गिर जाये तो हम टंकी को साफ कर देते हैं। अपनी टूटी खोलेंगे और वह गन्दा पानी धार के रूप में बहकर निकल जाएगा। भगवान भी चाहे तो धार के रूप में धरती पर वर्षा कर सकता है। आप कल्पना करें, यदि परमात्मा भी इसी प्रकार की मोटी–मोटी टूटियाँ खोल देता तो पूरी पृथ्वी पर हाहाकार मच जाता। जीव–जन्तु नष्ट हो जाते। मकान, वृक्ष, मनुष्य सब नष्ट हो

thearyasamaj.org

जाते। मुझे एक बार मसूरी में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमें मसूरी से कुछ दूरी पर एक झरना, जिसे 'कैम्पटी फॉल' कहते हैं, देखने का अवसर प्राप्त हुआ। हमने सोचा, हम भी स्नान कर लें। हम ज्यों ही कैम्पटी फॉल के झरने के नीचे खड़े हुए तो ऐसा लगा जैसे तीव्र और भारी धारा के रूप में सिर पर पत्थर पड़ रहे हैं। यदि प्रभु भी इसी प्रकार मोटी–मोटी पानी की धारें टूटियों से खोल देता तो हमारी क्या स्थिति होती ? उसकी कल्पना करके हम काँप उठते हैं। परन्तु वह परमात्मा बहुत ही दयालु है, उत्तम प्रबन्धक है, वह जानता है कि मेरी इन सन्तानों में कितनी सहन करने की क्षमता है। उतना ही जल बरसाता है, जितने की हमें आवश्यकता होती है। वह बूँद–बूँद बरसाता है ताकि हमें कोई कष्ट न हो, फुहारों के सदृश जल बरसाता है ताकि हमारे सिर पर कोई चोट न लगे वह भगवान कितना उत्तम प्रबन्धक है। तभी तो वेद में कहा है–"पश्य देवस्य काव्य न ममार न जीर्यति" उस परमात्मा की काव्यरूप सृष्टि को देखो जो सदा चिर–नवीन है।

इस परमपिता परमात्मा को शत–शत नमन करता हुआ मैं अपने और संसार के अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि 'हे परमात्मा! तूने इस विशाल ब्रह्माण्ड की रचना भी की है और फिर उसकी यथायोग्य व्यवस्था भी कर रहा है। तू सर्वोत्तम प्रबन्धक है।'

उत्कृष्ट शंका समाधान

♦स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, योगदर्शन महाविद्यालय, रोजड वन गुजरात

शंका–क्या सोचने में दोष होने से, व्यक्ति सुख से जीना चाहने पर भी, सुख से नहीं जी सकता ?

हाँ, यह बिल्कुल ठीक बात है। अगर सोचने में दोष है, सोचना ठीक से नहीं आता तो आप कितना ही सुख से जीना चाहें इच्छा आपकी कुछ भी हो, लेकिन सुख से नहीं जी सकते। सोचने को पहले ठीक करना पड़ेगा।

जिसका सोचने का ढंग ठीक है, वो सुखी है। और जिसका सोचने का ढंग गलत है, वो दुःखी है।

प्रश्न उठता है कि–सोचने का सही ढंग क्या है ? उत्तर है–वहीं तीन शब्द "कोई बात नहीं"। आपने "गीता सार" पढा होगा कि–

"क्या हो गया, उसने तुम्हारा क्या छीन लिया, जो कुछ लिया, यहीं से लिया और जो कुछ दिया, यहीं पर दिया, तुम क्या लाए थे, जो तुम्हारा खो गया, तुम्हारा क्या चला गया, तुम क्यों रोते हो, कुछ नहीं गया, सब भगवान का था और छीन लिया तो भगवान का गया, आपका कुछ नहीं गया।"

ये ध्यान रहे कि, यहाँ आध्यात्मिक–भाषा चल रही है। इसको लौकिक–भाषा में फिट मत कर देना, नहीं तो गड़बड़ हो जाएगी। आप कहेंगे कि पाकिस्तान, कश्मीर को छीन कर ले गया, तो तुम्हारा क्या ले गया। वहाँ यह नियम नहीं चलेगा। वो लौकिक–क्षेत्र हैं। वो क्षेत्र अलग हैं, आध्यात्मिक क्षेत्र अलग है।

हम सब संसार में आए, जन्म लिया, हमारे पास कुछ भी नहीं था। खाली हाथ आए थे और जब जाएँगे, तब भी खाली हाथ जाएँगे। फिर हमारा तो कुछ था ही नहीं। आध्यात्मिक दृष्टि से तुम्हारा कुछ नहीं था। और अगर किसी ने थोड़ा बहुत छीन भी लिया, तो भगवान बैठे नहीं है क्या ? वे देखते नहीं हैं क्या ?

आप संध्या में छह बार तो सुबह बोलते हैं और छह बार शाम को बोलते हैं–"योगस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः" अर्थात् जो हमसे द्वेष करते हैं, हम पर अन्याय करते हैं, जो भी गड़बड़ करते हैं, उसको हम ईश्वर के न्याय पर छोड़ देते हैं। आप अपने साथ किए गए अन्याय को ईश्वर के न्याय पर तभी तो छोड़ेंगे, जब आप बोलेंगे–"कोई बात नहीं।" यह उसी का अनुवाद है। भगवान बैठे हैं, नुकसान या द्वेष को ईश्वर के न्याय पर छोड़ दो। भगवान अपने आप न्याय करेगा।

हम झगड़े में पड़ेंगे तो हमारा योगाभ्यास बिगड़ जाएगा। हम ध्यान नहीं कर पाएँगे। हर समय हमारे मन में वही व्यक्ति याद आएगा, जिसने हम पर अन्याय किया, जिसने हमसे द्वेष किया। हम बस उसी को याद करते रहेंगे, और संध्या, ध्यान आदि कुछ नहीं होगा।

सीख यही है कि, ठीक ढंग से सोचेंगे, तो हम सुख से जीएँगे। और गलत ढंग से सोचेंगे, तो हम कितना ही सुख से जीना चाहें, नहीं जी पाएँगे। आओ हम, पहले सोचने का दोष ठीक करें।

न्याय

समाज की विडम्बना यह है कि हमने लड़की को अपने सम्मान और अपने धन से जोड़ लिया है। हमने उसे जीवित प्राणी मनुष्य न मानकर विनिमय की वस्तु बना दिया है। लड़की हमारी इच्छानुसार करती है, उसमें हमारा सम्मान है। अपनी इच्छा से करती है, हमारा अपमान है। लड़की घर जन्म लेती है, हमारी दरिद्रता का प्रतीक बनती है। लड़का जन्म लेता है, सम्पन्नता की आशा लाता है। इन विचारों के साथ हम नारी के साथ कैसे न्याय कर सकते हैं ?

thearyasamaj.org

मसालों का शहँशाह

मसाला उद्योग जगत् के शहंशाह के रूप में मशहूर महाशय धर्मपाल जी के विगत संघर्षमय जीवन और इनकी बेमिसाल उपलब्धियों को देखते हुए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ऐसे पुरुषार्थी, कर्मयोगी पुरुष करोड़ों में एक होते हैं, जो अपने सघर्ष से मन की इच्छाओं को मूर्तिमान् रूप दे देते हैं।

एमडीएच रूपी जो पौधा इन्होंने अपने हाथों से लगाया, उसे अपनी कड़ी मेहनत के पसीने से सींच–सींचकर एक विशाल वटवृक्ष का आकार दिया और यह विशाल वटवृक्ष आज भी दिन रात चौगुनी की रफ्तार से ऊंचाई की ओर अग्रसर है।

महाशय धर्मपाल जी का कहना है कि एम. डी. एच. की तरक्की के पीछे उन उत्तम संस्कारों और आदर्शों की ही सबसे बड़ी भूमिका है, जिनके बीज बचपन में ही मेरी पूजनीया माता चन्नन देवी जी और पूज्य पिता महाशय चुन्नीलाल जी ने मेरे अंतःकरण में बोए थे और मेरी भूमिका सिर्फ इतनी रही कि मैंने उन बीजों को पूरी तरह अंकुरित होने के लिए बेहतर वातावरण उपलब्ध कराया।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् पूरा संसार अपना परिवार है, यह महाशय जी का आदर्श वाक्य है और इसे इन्होंने मनसा–वाचा–कर्मणा पूरी तरह चरितार्थ कर दिखाया है।

एम. डी. एच. परिवार की ओर से दिल्ली के जनकपुरी में माता चन्नन देवी अस्पताल की स्थापना की गई है, मुख्य संरक्षक की भूमिका में महाशय जी अस्पताल के सेवा कार्यों की खुद देखभाल करते हैं, कहने का मतलब यह है कि महाशय धर्मपाल जी का संघर्ष व्यावसायिक उत्थान के साथ–साथ समाज सेवा को लेकर भी समर्पित है और व्यावसायिक कार्यों की व्यस्तता के बावजूद समाज–सेवा में इनकी पूरी दिलचस्पी रहती है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी महाशय जी ने आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रचार–प्रसार में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा तन–मन–धन से सहयोग प्रदान किया है।

महाशय धर्मपाल जी का जन्म एक बहुत ही साधारण, किन्तु संस्कारों की सम्पदा से सम्पन्न परिवार में हुआ था। बचपन में मस्तमौला स्वभाव होने की वजह से किताब के पन्नों में सिर खपाना इन्हें रास न आया और पिता महाशय चुन्नीलाल जी इनकी मानसिकता से पूरी तरह परिचित थे।

व्यावसायिक गुत्थियों को सुलझाने में परिपक्वता हासिल कर सके। उस काम से जुड़कर ही महाशय जी ने मसालों के बारे में छोटी–सी उम्र में ही बेसिक नॉलेज हासिल कर ली। फिर शुरूआती कुछ वर्षों तक क्रमशः लकड़ी का काम सीखा, साबुन बनाने का काम किया, कपड़े की दुकान पर शागिर्दी में रहे, हार्डवेयर का काम किया, चावलों की फैक्ट्री में काम किया, रेहड़ी लेकर दो–दो पैसे की मेहन्दी गली–गली बिक्री करते रहे और आखिर में फिर मसालों के अपने उसी पुश्तैनी कारोबार में आ डटे।

पाकिस्तान की हद में आने वाली अपनी जन्मभूमि से सदा–सदा के लिए नाता तोड़कर महाशय जी दिल्ली चले आए।

सुहावनी सुबह में नई दिल्ली के कुतुब रोड तांगा स्टैंड पर अपने तांगे पर सवार होकर जोर से चिल्ला रहा था– ''साब....दो आना सवारी टेशन....साब....दो आना सवारी....। साब....टेशन बैठो....दो आने....दो आने....। वह तांगे पर चाबुक फटकारते हुए लगातार चिल्लाता जा रहा था,'' लेकिन कोई सवारी नहीं मिल रही थी उसके मुख से निकले शब्दों और लिबास से साफ लग रहा था कि वह कोई रिफ्यूजी है।

पेट के लिए मेहनत और ईमानदारी से किया गया कोई काम बुरा नहीं होता, लेकिन यह काम तेरे लायक नहीं है। तू तांगा चलाता रहा, तो बड़ा आदमी कैसे बनेगा...छोड़ यह काम और कोई दूसरा धन्धा कर।

बहन उसे परिवार के अन्य लोगों के साथ खाना परोस देती है, मगर उसका ध्यान कहीं और है। आखिरकार युवक उसी दिन तांगा बेचकर अपना पुश्तैनी कारोबार फिर शुरू करने का फैसला लेता है। फिर वह घोड़ा–तांगा बेचने निकल पड़ता है, तो विधाता उसे देखकर हौले–हौले मुस्करा रहा है, क्योंकि युवक के भाग्य ने नियत समय पर करवट जो ली है। अब वह एक ऐसे कारोबार की तरफ कदम बढ़ाने जा रहा है, जिसे भविष्य में एक अनुकरणीय इतिहास बनना है।

तांगा बेचने के बाद शुरू हुआ मसाला जगत् में बादशाहत कायम करने का सिलसिला, जिसे महाशय जी जैसे कर्मयोग के सच्चे साधक ने पूर्णता की ओर अग्रसर कर दिया और आखिरकार मसाला–उद्योग जगत् के शहँशाह का खिताब पाया।

तांगे के कोचवान की सीट से मसालों के शहँशाह के सिंहासन तक पहुंचने की यह अनोखी दास्तां है।

महाशय जी की जीवनी।

साभार–परोपकारी से।

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक–ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

thearyasamaj.org

दो कर्म योगी

♦कृष्ण चन्द आर्य

विश्व के कोने कोने में दीवाली का त्यौहार प्रतिवर्ष धूमधाम, श्रद्धा और हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस अवसर पर मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम लंका के दुष्ट राजा रावण का संहार करके जगत जननी सीता के साथ जहां अयोध्या पधारे थे वहां दूसरी ओर इसी दिन संध्यावेला में विश्व में वेदों का डंका बजाने वाले महान् समाज सुधारक और त्याग के मूर्ति महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने नश्वर शरीर को त्याग कर परम ज्योति में समाहित हो गये। हमें इन दोनों महान् आत्माओं के जीवन से निम्नलिखित प्रेरणा ग्रहण करके अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए।

श्रीराम का जीवन दीन–दुखियों और अन्य व्यथित जनता के दुख को दूर करने में व्यतीत हुआ। श्रीराम एक आदर्श और मर्यादा पुरूषोतम थे जिन्होंने कण–कण और क्षण–क्षण में मर्यादाओं का पालन किया। अन्याय, अत्याचार और दम्भ के आगे घूटनाटेक नीति नहीं अपनाई। उनका जीवन एक मीठी रोटी की तरह है जिसे जहां से भी चखो मिठास ही आयेगी। श्रीराम एक अच्छे माता–पिता और गुरू भक्त थे। वे प्रातःकाल इन तीनों विभूतियों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेते थे। इनके सम्बन्ध में कविवर तुलसी दास जी लिखते हैं :

प्रातः काल उठिके रघुनाथा, मात, पिता, गुरू नाबेहि माथा।।

श्री राम परोपकारी, सदाचारी थे। वे अत्याचारी और अहंकारी रावण के कुकृत्यों का नाश करके जनमानस में बधाई के पात्र बने। वे बड़े क्षमाशील थे। युद्धभूमि में रावण के शव के आगे विभीषण को विलाप करते देख कर वह कह उठे कि अब रोने का समय नहीं है। बहादुरों की तरह उठकर अपने भाई की चिता को मुखाग्नि दो। क्योंकि यह जैसा तुम्हारा भाई है वैसे ही मेरा भाई है। मरने के उपरांत अब मेरा रावण से कोई भी वैर नहीं रहा। क्षमाशीलता का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है? युद्ध की समाप्ति के उपरांत अयोध्या में लगे दरवार में श्रीराम ने नल, नील, अंगद, जामवंत और सुग्रीव आदि नायकों को विदा देते हुए कहा था :

प्रति उपकार करों का कोरा,
समरथ होई सकहिं न मन मोरा
तुमरे बल मैं रावण मारा।

उन्होंने स्वयं रावण का वध किया और उसे मारने का समस्त श्रेय अपने मित्रों का दिया। मैत्री का कितना अनुपम एवं अनुकरणीय उदाहरण है। श्रीराम अयोध्या वासियों से अत्याधिक प्रेम रखते थे। वे अपनी जनता के तनिक भी दुखी होने पर तड़प उठते थे। वे शांति, स्नेह, करूणा और दया के आदर्श थे। वे स्वयं कहते हैं :

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सो नृप अबसि नरक अधिकारी।
तजिये विप्र जो वेद विहीना,
तजि निज कर्म विषय लवलीना।।

राम भक्त तुलसी दास के अनुसार रावण का वध स्वयं रावण ने ही किया था। इसमें मर्यादा पुरूषोतम श्री राम का लेषमात्र भी दोष नहीं था। वे तो उसे हटाते रहे, बचाते रहे और समझाते रहे। लेकिन मृत्यु उसके सिर पर अपना साम्राज्य जमाने के लिए मंडरा और मुस्कुरा रही थी। भक्त तुलसीदास कहते है :

रावण रावण को हन्यो, दोष राम को नाहीं,
हित अनहित निज देखिये, तुलसी आचार्य माहीं।

वेदों के इस महान् भाष्यकार का श्रीराम के हाथों मारा जाना उसके लिए भाग्यशाली था। श्रीराम माता–पिता, प्रजा, आचार्य सभी का आदर करते थे। हमारे जीवन में श्रीराम के जीवन से सम्बन्धित यह बातें समाहित होनी चाहिए। हमें उन्हीं की तरह अच्छे पुत्र, योग्य शासक, प्रजापालक और हित चिंतक बनना चाहिए। श्रीराम की तरह क्षमाशीलता भी हमारे जीवन का कर्म, धर्म और मर्म होना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दीपावली के दिन इस नश्वर शरीर को त्याग कर परम गति प्राप्त की थी। वे भी श्रीराम की तरह ही मनुष्य मात्र के हितैषी रहे। उनके एक शिष्य जो तहसीलदार थे ने एक व्यक्ति को इसलिए कैद कर दिया कि उसने स्वामी जी को विष मिश्रित पान दिया। जब स्वामी जी को इसका पता लगा तो अपने तहसीलदार शिष्य पर भड़क कर कहने लगे, मैं लोगों को मुक्त कराने आया हूं, जेल भेजने नहीं। तहसीलदार साहब स्वामी जी की इस उदारता को देखकर अचंभित हो गये और उन्होंने उस व्यक्ति को कारागार से मुक्त कर दिया। अपने रसोईए को भी उन्होंने धन देकर भगा दिया और उसे कहा कि यदि मेरे शिष्यों को ज्ञात हो जाएगा कि तुमने मुझे भोजन में जहर दिया है तो वे तुम्हारा तम्बू उखाड़ फेंकें इससे पहले तुम यहां से शीघ्र भाग कर अपनी जान बचा लो। राव कर्ण सिंह ने तलवार निकाल कर जब स्वामी जी पर प्रहार करना चाहा तो उसके बाजू को पकड़ कर तलवार छीनकर उसके दो टुकड़े कर दिये और उसकी सुमति की प्रार्थना की। अपने मारने वालों के भी वे हितचिंतक थे। ऐसे थे महर्षि दयानन्द सरस्वती। हमें इन महापुरूषों के जीवन से अपने जीवन को सुधारने की कोशिश करनी चाहिए और दीपावली के इस त्यौहार की सार्थकता सिद्ध करनी चाहिए।

thearyasamaj.org

हिमाचल प्रदेश में बलि प्रथा को उच्च न्यायालय हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रतिबन्धित किये जाने के उपरान्त भी कुछ लोगों द्वारा इसका समर्थन किया जा रहा है अतः इस विषय में आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल द्वारा माननीय मुख्य मन्त्री तथा अन्य सम्बन्धित अधिकारियों को लिखे गये पत्र की प्रतिलिपि। सभी आर्य समाजों से अनुरोध है कि वे इसे अपने स्तर पर भी सम्बन्धित उपायुक्तों तथा पुलिस अधीक्षकों को इसी आधार पर पत्र लिखें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश

सेवा में,

श्री वीरभद्र सिंह जी,
माननीय मुख्य मन्त्री,
हिमाचल प्रदेश शिमला।

विषय : धार्मिक स्थानों या आयोजनों पर पशु–बलि का विधान शास्त्र सम्मत नहीं है।

श्रीमान् जी,

नमस्ते!

माननीय उच्च न्यायालय शिमला (हि. प्र.) ने धार्मिक स्थलों (मन्दिरों) एवं अन्य धार्मिक आयोजनों पर प्रदेश में पशु–बलि पर प्रतिबन्ध लगा कर एक ऐतिहासिक निर्णय दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश इस निर्णय का हार्दिक स्वागत करती है। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि माननीय न्यायालय ने पर्यावरण की रक्षा, प्राणीमात्र के लिये दया की भावना, निरपराध मूक जीवों के प्रति क्रूरता की समाप्ति, समाज में लम्बे समय से चली आ रही कुप्रथा को मिटाने के लिये अपना यह प्रसंशनीय निर्णय दिया।

उल्लेखनीय है कि किसी भी आर्ष ग्रन्थ यथा वेद, दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत आदि में कहीं पर भी किसी भी पशु हिंसा का विधान नहीं है। अपितु इसके विपरीत अनेकों स्थानों पर इन मूक प्राणियों की रक्षा का ही विधान किया गया है। इन ग्रन्थों के सैंकड़ों ऐसे प्रमाण उपस्थित किये जा सकते हैं जिनमें पशुओं की रक्षा करने हेतु उपदेश दिया गया है। उदाहरणार्थ हम कुछ प्रमाण दे रहे हैं :–

यजमानस्य पशून् पाहि (यजुर्वेद १/२)
अर्थात् यजमान के पशुओं की रक्षा करो।

इममूर्णायुं वरूणस्य नाभिं त्वचं पशूनां द्विपदां चतुष्पदाम्।
त्वष्टुः प्रजानां प्रथम जनित्रमग्ने मा हिंसीः परमे व्योयमन्।।
(यजुर्वेद १२/४०)

अर्थात् इन ऊन रूपी बालों वाले भेड़, बकरी, ऊंट आदि चौपाये तथा पक्षी आदि दो पग वालों को मत मार।

वर्षे वर्षेश्वमेधेन यो यजेत शतं समाः।
मांसानि च न खादेद्यस्तयोः पुण्यफलं समम्। (मनु. ५/५)

जो सौ वर्षों पर्यन्त अश्वमेध यज्ञ करता है और जो जीवन भर मांस नहीं खाता, दोनों को समान फल मिलता है।

सुरां मत्स्यान्मधु मांसमासवकृसरौदनम्।
धूर्तैः प्रवर्तितं ह्येतन्नैतद्वेदेषु कल्पितम्।।
(महाभारत शान्तिपर्व २६५/६)

सुरा, मछली, मद्य, मांस आसव कृसरा आदि खाना धूर्तों ने प्रचलित किया है। वेद में इन पदार्थों के खाने–पीने का विधान नहीं है।

अहिंसा परमो धर्मः सर्वप्राणभृतां वरः।।
(महाभारत आदिपर्व ११/१३)

किसी भी प्राणी को न मारना परम धर्म है।

योग दर्शन में पांच यमों में महर्षि पतञ्जलि ने सर्वप्रथम स्थान अहिंसा को ही दिया है:–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पांच यम हैं।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के दसवें समुल्लास में लिखा है :–

"मद्य मांस का ग्रहण कभी भूल कर भी न करें।"

"हाथी, घोड़े, ऊंट, भेड़, बकरी, गधे आदि से बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं के मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा। देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे तभी आर्यावर्त्त व अन्य देशों में बड़े आनन्द में मनुष्य आदि प्राणी बसते थे।"

सन्त कबीर सन्तों में मुख्य माने जाते हैं। उनकी कबीर बीजक में यह लेख है :–

काजी काज करहु तुम कैसा। घर–२ जाह करावहु भैंसा।
बकरी मुर्गी किन फरमाया। किसके हुकम तैं छुरी चलाया।।
दर्द न जाने पीर कहावैं। बैतां पढ़–२ जग समुझावै।।
कह हि कबीर सैयाद कहावै। आप सरीखे जग कबुलावे।।

गुरू ग्रन्थ साहब में प्राणी हिंसा का निषेध :–

जेरतु लगे कपडीं जामा होई पलीत।
जेरत पीवहि माणसा तिन कीउ निरमल चीत।।
(माझ की वार महला १.१.६)

हिंसा तऊ मनते नहीं छूटी जीभ दया नहीं पाली।
(राग सारंग परमानन्द)

मजन तेग़ वर खूने कसे वे दरेग।
तुरा नीज़ खूनास्त वा चराव तेग़।।
(जफरनामा गुरू गोविन्द सिंह जी)

thearyasamaj.org

अर्थात् किसी की गर्दन पर निःसंकोच होकर खड़ग न चला, नहीं तो तेरी गर्दन भी आसमानी तेग से काटी जायेगी। और भी कितने ही उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं परन्तु हमने केवल दिग्दर्शन के रूप में इतने ही लिये हैं। इसके अतिरिक्त तनिक निष्पक्ष होकर विचारिये कि :–

- ईश्वर सब प्राणियों का पिता होने से सब प्राणी उसके पुत्र हैं। क्या कोई पुत्र को मार कर पिता का प्रिय बन सकता है ?
- इतिहास साक्षी है कि माताओं ने अपने पुत्रों की रक्षा के लिये एक बार नहीं लाखों बार अपने बलिदान दिये हैं। लेकिन निर्दोष और मूक प्राणियों को मारकर माता को अर्पित करना कहां का न्याय हैं ?
- सभी देवी देवताओं के वाहन पशु–पक्षी हैं फिर उनका वध देवाताओं के नाम करना कितना भयंकर पाप है।
- धार्मिक एवं सामाजिक आयोजन (पर्व) देश के लोगों में उत्साह, प्रेम, भाईचारा, परस्पर सहयोग तथा प्राणीमात्र के प्रति कल्याण की भावना उत्पन्न किया करते हैं। वहां पर मूक प्राणियों की हिंसा करके रक्त बहाने का क्या काम ?
- आज से लगभग १५००–२००० वर्ष पूर्व यह कार्य कभी भी, कही भी नहीं किया जाता था। फिर धर्म में तो हिंसा का कोई स्थान नहीं है वह भी निरपराध मूक प्राणियों की हिंसा। यह तो अत्यन्त निन्दनीय है धर्म का उद्देश्य किसी के प्रति वैर भाव या स्वार्थ का भाव रख कर उसके प्राणों को लेना नहीं है अपितु सभी के प्रति प्रेमपूर्वक व्यवहार करना है।

इस प्रकार से पशु–बलि न तो शास्त्रोनुमोदित है, न विज्ञान, न मानवता और न ही धर्म के अनुसार है। अतः यह हर हाल में बन्द होनी ही चाहिये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्य मन्त्री जी के इस निर्णय का भी स्वागत करते हुए उनका धन्यवाद करती है कि वे न्यायालय के निर्णय के अनुसार ही कार्य करेंगे।

आप श्रीमान् जी से भी अनुरोध है कि इस बारे में न्यायालय के निर्णयानुसार कार्य करते हुए समाज से इस कुप्रथा का अन्त करने में अपना श्रेठ योगदान देने की कृपा करें।

धन्यवाद !

भवदीय
रामफल सिंह आर्य
महामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
हिमाचल प्रदेश

श्रद्धेय आचार्य राजवीर शास्त्री दिवंगत

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, यमुनानगर (हरियाणा)

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष व मासिक "दयानन्द सन्देश" के अवैतनिक एवं यशस्वी सम्पादक का देहान्त दिनांक २४ सितम्बर, २०१४ ई. को हो गया। वे कुछ वर्षों से रोग–ग्रसित थे। उनके देहान्त का समाचार पाकर आर्य जगत् शोक में डूब गया।

वैदिकशास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान् आचार्यवर राजवीर शास्त्री जी का जन्म सन् १९३८ में फज़लगढ़ जिला गाज़ियाबाद में श्री शिवचरणदास जी के घर में हुआ था। गुरूकुल, झज्जर में आपने अध्ययन किया था तथा कुछ समय वहाँ अध्यापन कार्य भी किया। तत्पश्चात् मेरठ विश्वविद्यालय से एम.ए. (संस्कृत) व वाराणसी से प्राचीन व्याकरण की परीक्षा उत्तीर्ण करके आचार्य बने। लोकेषणा व वित्तेषणा से निवृत श्रद्धेय आचार्यवर कई वर्षों तक दिल्ली प्रशासन के अधीन संस्कृत का अध्यापन कार्य भी करते रहे। लाला दीपचन्द आर्य जी द्वारा स्थापित आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में सेवारत रहते हुए अनेक ग्रन्थों का लेखन, संशोधन अनुसंधान व सम्पादन आदि सुकार्य कुशलतापूर्वक करते रहे जिनमें दयानन्द वैदिक कोष, यजुर्वेद देवतार्थ सूची, महर्षि दयानन्द वेदार्थ प्रकाश, दयानंद दिग्विजयार्क, ईश, केन व कठ उपनिषद् भाष्य, योग मीमांसा, विशुद्ध मनुस्मृति, संस्कार विधि, उपदेश मञ्जरी, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, पातंजल योग दर्शन भाष्यम्, षट्दर्शन पदानुक्रमाणिका आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज, सान्ताक्रुज़, मुम्बई एवं परोपकारिणी सभा, अजमेर तथा कुछ अन्य वैदिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित श्रद्धेय श्री पं. राजवीर शास्त्री जी "सरिता" द्वारा प्रकाशित वैदिक सिद्धांतों विषयक आलोचनात्मक लेखों के सप्रमाण व सटीक जो उत्तर दिया करते थे, वे बहुत पसन्द किए जाते थे। प्रामाणिक सृष्टि सम्वत् विषयक उनका विस्तृत लेख इतने लोक प्रियता व मान्यता प्राप्त कर चुका है कि अब लगभग सभी वैदिक विद्वानों व पत्रिकाओं ने उसी सम्वत् को स्वीकार भी कर लिया है।

पूज्य आचार्य जी अत्यन्त विनम्र, सत्याग्रही, सत्यान्वेशी एवं वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ थे। उनको सश्रद्ध विदाई देते मन कह रहा है–

मौत उसकी जमाना करे जिसका अफ़सोस।
यूँ तो सभी आते हैं बारी–बारी जाने के लिए।।

आज आचार्य जी सशरीर हमारे मध्य नहीं रहे परन्तु हम जानते हैं–यशः शरीरम् न विनश्यति।

thearyasamaj.org

मधुमेह न बनायें, होवे तो हटायें

♦डॉ. श्याम सिंह चौहान 'आर्य', आर. एम. पी.–बी. आई. एम. (लखनऊ)

मधुमेह (डायबिटीज) रोग अपने आप में, अर्थात् पृथक से कोई बीमारी नहीं कही गई है। यह हमारे द्वारा ही त्रुटिपूर्ण आहार–बिहार, असन्तोष, शोक, मानसिक चिन्ता, इन्द्रियों की इच्छा के वश में रहने से ही हो जाती है। भारी मिष्ठान, गरिष्ठ भोजन, वसादि के अधिक खानपान करने, उग्रता, क्रोध से तनाव भी इसका कारण हो जाता, जो हमारा ही दोष होता है। उपरोक्त सभी कारणों के अतिरिक्त भ्रमण, योगासन, थोड़ा सा प्राणायाम आदि ना करना, व्यंजन के स्वादों में आदी होना, आलस्य प्रमाद में होकर उचित समय पर ना उठाना, श्रमादि ना करना भी इसकी उत्पत्ति का मूल कारण हो जाते हैं। इन सभी दोषों एवं कारणों से हम अपनी मुख्य ग्रन्थियों (मशीनों) अग्नाशय एवं यकृत आदि को (जो पाचक शक्ति बनाने एवं रक्त, मज्जा, धातु आदि बनाती हैं) क्षीण कर लेते हैं। ये दोनों ग्रन्थियाँ (मशीनें) सुदृढ़ एवं सक्रिय शक्ति से ही खाद्य–पदार्थों के रस से रक्त एवं धातु आदि निर्माण करती हैं। अग्न्याशय एक उपदस्थ ग्रन्थि है, इसे अग्नि प्रेरक (Pancreas Duct) कहते हैं, इसमें ही कुछ कोषों के पुंज भी होते हैं। इन कोषों के द्वारा अन्तःस्राव उत्पन्न होता है, जिसे 'इन्सूलीन' कहते हैं। इन्सूलीन ही रक्त में पहुंची हुई विभिन्न प्रकार की शर्कराओं का दहन अथवा संचय करती है। इससे मधुमेह (डायबिटीज) रोग होने में रुकावट रहती है। अगर उस ग्रन्थि में क्षीणता, निष्क्रियता आ जाये तो इन्सूलीन नहीं उत्पन्न होता है, तब मधुमेह होना आरम्भ हो जाता है। दूसरी मुख्य ग्रन्थि (मशीन) यकृत बड़ी ग्रन्थि है, यह रञ्जक पित्त बनाता है, अग्न्याशय के द्वारा आये पाचक पित्त की सहायता से यकृत इन रसों (पाचक व रञ्जक पित्त) को मिलाकर खाद्य पदार्थों के रस से रक्त बनाता है। यकृत ही पाचन शक्ति रखने में अग्न्याशय की पूर्ण सहायता करता है। इनके कमजोर होने के कारण भारी गरिष्ठ, अधिक मीठे पदार्थ, नशीले पेय (अलकोहल) अधिक सेवन करना ही होते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ फल जैसे चीकू, अंगूर, केला आदि जो अधिक मीठे होते हैं और सब्जियों में आलू, अरबी, फूल गोभी भी मीठे होने से हानिकारक होते हैं और अन्न में चावल, दालों में उड़द मिठास के गुण वाले होते हैं। इसलिए बहुत कम मात्रा में और अत्यन्त समय के अन्तराल के प्रयोग हों वे तो ठीक रहता है, अधिक एवं प्रतिदिन के प्रयोग से रोग उत्पन्न कर सकते हैं। अनियमित प्रकार एवं स्वाद के वश में आकर हम अपनी पाचक एवं रञ्जक पित्त रस बनाने वाली ग्रन्थियों को क्षीण कर देते हैं। वह ग्रन्थि इन्सूलीन तत्व नहीं बनाती, फिर मधमेह होना प्रारम्भ हो जाता है। हमारे शरीर की स्वस्थता हेतु 'शर्करा' अंश केवल १०४ होना चाहिए, जब यह इससे अधिक १२० से भी अधिक हो जाता है तो शरीर में अनेक प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न होने लगती हैं। ज्ञानेन्द्रियों एवं इन्द्रियों में क्षीणता आने लगती है फिर हमें परेशान होकर चिकित्सा हेतु तुरन्त लाभ लेने की औषध इन्जेक्शन आदि इन्सूलीन की पूर्ति हेतु प्रयोग करने पड़ते हैं।

फिर हमें उन औषधियों के प्रयोग करने की आदत पड़ जाती है जिससे कभी–कभी सामान्य से भी कम होकर हृदय कोशिकाओं आदि में कमी आ जाया करती है। इसलिए पहले से ही स्वास्थ्य रक्षक नियमों में चलें।

<u>मधुमेह रोग के लक्षण :</u>

मधुमेह होने पर सबसे पहले पैरों के तलवों में ठण्डापन, सुन्नपन और झनझनाहट सी महसूस होने लगती है। फिर टाँगों की पिण्डलियों में दर्द होने लगता है। मधुमेह के कारण 'नर्व प्राब्लम' रक्त संचार, प्रसार सम्बन्धी विकार बनने लगते हैं; उसी कारण से पैर ठण्डे से होने लगते हैं और पिण्डलियों में दर्द होने लगता है, सिर में दर्द एवं चक्कर से होने लगते हैं। हृदय में कमजोरी होने लगती है, कभी–कभी घबराहट होने लगती है, मधुमेह (शुगर) का कुप्रभाव शुक्राशय पर भी पड़ता है वीर्य अल्प–मात्रा में बनता है और वह पतला सा होने लगता है जिससे शीघ्रपतन, यौन क्षीणता, नपुंसकता होने लगती है, काम इच्छा भी नहीं रहती है, मूत्र बार–बार आता है, रात्रि में अधिक होता है। शरीर के किसी अंग या स्थान पर चाकू आदि से कटने या फोड़ा हो जाने से वह पक जाता है और शीघ्र ठीक नहीं होता है, कष्ट असाध्य बन जाता है। मधुमेह हो जाने के कुछ समय के पश्चात् विटामिन ए, सी आदि की कमी पड़ने लगती है, बार–बार जुकाम आदि रोग होने लगते हैं। आंखों से पानी आने लगता है, क्षीणता होकर आंखों में जाला, तिमिर अन्धकार अभिष्यन्द, नीलिका, कांचनाग देशी भाषा में मोतिया कहते हैं, ये रोग होने आरम्भ हो जाते हैं। अधिक प्रभाव होने पर रोगी अन्ध दृष्टि भी हो जाया करते हैं। इन गम्भीर परिणामों से बचने के लिए जीवन में आरम्भ से ही सतर्क एवं संयम से रहना तथा जीवन निर्वाहार्थ दिनचर्या नियम, उपायों के अनुसार प्रयोग तथा सन्तुलित भोजनादि करना अनिवार्य समझना चाहिए। इसके नियम एवं उपाय आगे दिये जा रहे हैं, जानकारी लेकर तदनुसार उपयोग करें।

१. दिनचर्या–सुस्वास्थ्य ही सुखों का आधार है, ''स्वास्थ्य है

thearyasamaj.org

तो जहान है, नहीं तो श्मशान है'' इसलिए शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए दिनचर्या के नियमों के अनुसार व्रत धारण कर पालन करना चाहिए। ये नियम निम्न लिखित क्रमानुसार हैं।

(क) उत्थान समय एवं शौचादि–प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में या सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पूर्व ही अवश्य उठना चाहिए, गुरु रामदेव जी एवं गुरु डॉ. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी ने भी पुस्तकों में संकेत किया है कि ''सवेरा सोये सवेरा जागे, स्वास्थ्य में सबसे आगे'' इसके अनुसार रहने से स्वास्थ्य में सुधार रहेगा। प्रातःकाल उठते ही रात का रखा पानी पीयें, घाघ कवि ने कहा है कि

''प्रातःकाल खटिया से उठकर पीये तुरन्त ही पानी!
ताके घर पर वैद्य न आवे, बात घाघ ने जानी''

उसके पश्चात् भ्रमण करना भी आवश्यक है। तत्पश्चात् शौचादि से निवृत्त हो जाना चाहिए। अगर मल सूखा कड़ा हो या साफ नहीं होता हो तो रात को त्रिफला दूध से लेवें और प्रातःकाल गर्म पानी में काला नमक, नींबू रस डालकर पीयें।

(ख) दन्त धावन–दांत साफ करने हेतु नीम, बबूल, अर्जुन, कनेर आदि एवं सहजना, लिसौड़ा, ढाक, बहेड़ा, आखा भी कभी–कभी प्रयोग करना चाहिए। ये दांतों एवं शरीर की अनेक व्याधियों को ठीक रखने में सहयोगी होते हैं।

(ग) जिव्हा निर्लेखन–हाथ साफ करके, जीभ का मैल मलकर जड़ तक साफ करना चाहिए।

(घ) गण्डूस धारण–मुँह में पानी डालकर गले का मैल बाहर निकाल देना चाहिए।

(ङ) स्नान–प्रतिदिन स्नान करना (प्रातःकाल) अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं स्वास्थ्यकर है।

(च) आसन/प्राणायाम–दिनचर्या में आसन या प्राणायाम ही स्वास्थ्य की रक्षार्थ प्रतिदिन करना आयुर्वेद में वर्णित है। जो मजदूर भाई वजन उठाने, ढोने या फावड़े आदि का कार्य करते हैं और जो मातायें–बहनें चक्की, खुटाई, फसल लगाई, कटाई छिपाई आदि कार्य करती हैं, वे तो स्वतः ही आसन समान व्यायाम कर रहे हैं। अन्य सभी को आसन अवश्य ही करने चाहिए। मधुमेह से बचाव हेतु कौन–कौन से आसन करने होते हैं व आगे बताये जायेंगे। यह अभी दिनचर्या के नियमों का संकेत हो रहा है।

(छ) प्राणायाम और सन्ध्योपासना :– प्राणायाम भी आयुर्वेद में स्वास्थ्य सुधार के लिए आवश्यक बताया है, अतः नित्य करना चाहिए।

(ज) आहार :–भोजन का समय निश्चित होना चाहिए, भोजन में खाद्य द्रव्य सौम्य एवं सरलता से पचने वाला हो, तामसिक एवं कठिनता से पचने वाले पदार्थ नहीं होने चाहिए। शास्त्रों में कहा है–''जैसा खाये अन्न, वैसा होवे तन–मन'' साथ ही स्वस्थता के बजाये दोष हो जाते हैं। महर्षि चरक ने शिष्यों से पूछा था, ''कोऽरुक, कोऽरुक, कोऽरुक'' वाग्भट्ट जी ने उत्तर दिया–''हित भुक, मित भुक, ऋतु भुक'' (हितकारी, उचित मात्रा व ऋतु अनुकूल ही भोजन जो करता है वह हमेशा स्वस्थ रहता है) भोजन का समय इस प्रकार होवे, प्रातःराश सन्ध्योपासना के पश्चात्, भोजन दोपहर का १२ बजे तक, सांय का समय ८ बजे तक उत्तम होता है। प्रातः राश में अन्न का कम सेवन करना हितकारी होता है। अंकुरित अनाज, मूंग आदि में काला नमक व नींबू रस मिलाकर लेना चाहिए। रात्रि में भोजनोपरान्त कम मीठा दूध अवश्य लेना चाहिए। भोजन में दाल उड़द, राजमा, अरबी, आलू, फूल गोभी ना खायें अच्छा है, खावे तो सूक्ष्म खायें। मधुमेह का प्रभाव होने पर मीठी चीज सब बन्द करनी चाहिए। फलों में चीकू, अंगूर, केला आदि न खावें। चिकनी, तली हुई चीज कम ही प्रयोग करें।

२. आवश्यक तत्वों का सेवन करें :– मुधमेह अगर किसी को हो गया है तो इस अवस्था में मेटोबोलिस प्रोसेस में असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है। लीवर को ताकत प्रदान करने और विकार वाले तत्व बाहर निकालने हेतु एलोवेरा (घी कुँवार रस) पानी में ले करके पीयें, एक आंवला भी प्रतिदिन ले सकते हैं। दाल–चीनी पानी में उबालकर, छानकर वह पानी भी प्रतिदिन पीना लाभदायक होता है। बड़ी उम्र वालों के लिए अदरक का रस लाभदायक होता है। पित्त प्रकृति वालों के लिए त्रिफला अच्छा है। योगासन एवं योग मुद्रायें जो मधुमेह रोग की निवृत्ति करते हैं, उनका भी प्रतिदिन प्रातः सांय अभ्यास करते रहना चाहिए। योगासनों में :–हलासन, पदमासन, मण्डूकासन और अर्द्ध मत्स्येन्द्रासन करना अधिक उपयोगी हैं। घरेलू औषधियों में दाल चीनी प्रतिदिन दोनों समय पानी में पकाकर छानकर पीनी बहुत लाभदायक है, जुकाम आदि में भी लाभ करती है।

मैथी व सदाबहार (फूल पेड़) के पत्ते मिला, रात को पानी में भिगोकर, प्रातः छानकर दोनों समय प्रतिदिन तीन माह तक पीने से मधुमेह में लाभ होगा। शिलाजीत पेय भी लाभकारी है।

जामुन की गिरी का चूर्ण करके जामुन के सिरके के साथ १–२ तोला तीन समय लेने से लाभकारी होता है। करेले का रस लेने से भी लाभ होता है। परहेज सभी प्रकार के औषध योगों के साथ अनिवार्य होता है। नियम विधि अनुसार उपयोग से स्वयं को सेहतमन्द रखें।

thearyasamaj.org

पितामह

♦सम्पादक

महाभारत कालीन समय में महाभारत युद्ध के जननायक योगेश्वर श्रीकृष्ण थे। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में जब अग्रपूजे होने का प्रश्न उठा तो युधिष्ठिर ने हाथ जोड़ कर भीष्म पितामह से इसका समाधान करने हेतु प्रार्थना की। पितामह भीष्म बोले यहां पर उपस्थित समग्र राजाओं महाराजाओं में शारीरिक बल, वेद शास्त्रों का ज्ञान, विज्ञान, तप और त्याग में सबसे अधिक शक्तिशाली श्रीकृष्ण के अतिरिक्त और कोई नहीं है। अतः यह यज्ञ उन्हीं के मार्ग दर्शन में होना उचित है तथा हम सब में वही अग्रपूज्य हैं। यद्यपि शिशुपाल को श्रीकृष्ण के प्रति अभद्र, कटु शब्द कहने पर जीवन से हाथ धोना पड़ा। तब भी पितामह भीष्म ने अपने वचनों की सार्थकता एवं सत्यता सिद्ध कर ही दी। महाभारत में भीष्म ही केवल मात्र ऐसे योद्धा थे जिनके चारों ओर युद्ध की धुरी घूमती रही और उन्होंने प्रथम दस दिनों तक सफलतापूर्वक युद्ध का संचालन किया। यह भीष्म ही थे जिन्होंने अपने पिताश्री के शोक और व्याकुलता को दूर करने हेतु सत्यवती के पिताश्री को आजन्म शादी न करने का अनुरोध किया था। उनकी प्रार्थना पर पितामह भीष्म ने आजन्म ब्रह्मचारी रहने की भीषण प्रतिज्ञा की और उसे जीवन की अन्तिम सांस तक निभाया। उनका बचपन का नाम देवव्रत था। जो महर्षि परशुराम जी के प्रिय शिष्यों में से एक थे। जब द्रुपदपुत्री गांधारी का स्वयंवर हो रहा था तो उस स्वयंवर में भाग लेने हेतु महाराज द्रुपद ने हस्तिनापुर नरेश को आमन्त्रित नहीं किया था। परिणाम स्वरूप माता सत्यवती से आज्ञा लेकर के पितामह भीष्म महाराज द्रुपद के दरवार में जा धमके थे। उन्होंने महाराज द्रुपद से अपनी पुत्री गांधारी की शादी धृतराष्ट्र से करने हेतु कहा था, जिसे उन्होंने तुरन्त अस्वीकार कर दिया था। बौखलाए भीष्म ने अपने तुनीर से तीर निकालते हुए उपस्थित सभी राजाओं–महाराजाओं को ललकारते हुए कहा यदि किसी व्यक्ति में साहस है तो मुझे रोक करके बताए। भीष्म के इस वाक्य से वहां शमशान भूमि की मूकता छा गई। परिणाम की गम्भीरता को देखते हुए भीष्म ने राजा द्रुपद को अपनी पुत्री को साथ चलने के आदेश देने को कहा, जिसे गांधारी ने तुरन्त स्वीकार कर लिया क्योंकि वह बालिका जानती थी कि यदि भीष्म के वचनों का पालन न किया गया तो स्वयंवर भूमि भीष्म की क्रोधाग्नि के सामने शमशान भूमि बनकर रह जाएगी। और उसने अन्धे धृतराष्ट्र के गले में वरमाला डालकर उन्हें अपना पति स्वीकार कर लिया तथा आंखों पर पट्टी बांधकर आयु पर्यन्त अन्धे रहने की भीष्म प्रतिज्ञा कर ली।

महाभारत के युद्ध के उपरांत जब श्रीकृष्ण द्वारिका जाने लगे तो वे गांधारी से भी मिले। उनका नाम सुनते ही गांधारी का चेहरा अपने सौ पुत्रों की हत्या के आरोपी कृष्ण का नाम सुनते ही तमतमा गया और उसने श्राप देते हुए कहा कि जैसे मैं अपने सौ पुत्रों के वियोग में तड़प रही हूं बैसे ही यदि मैंने पतिव्रत धर्म निभाया है तो हे द्वारिकाधीश तुम्हें श्राप देती हूं कि तुम्हारे यदुवंश का भी आपस में लड़ते–झगड़ते सर्वनाश हो जाए। श्रीकृष्ण बिना गांधारी के चरण स्पर्श किये हुए यह कह कर निकल गये कि ठीक है आपने मुझे चरण स्पर्श करने से भी वंचित कर दिया, अब मैं जाता हूं। युद्ध के कारणों को जानने के लिए पितामह भीष्म कविवर दिनकर के शब्दों में इस प्रकार कहते हैं :

युद्धिष्ठिर क्या हुताश्न शैल सहसा फूटता है ?
कभी क्या बज्र निर्घन व्योम से भी फूटता है ?

स्वयं इस का उत्तर देते हुए भीष्म युधिष्ठिर को समझाते हुए कह रहे हैं :

अनल गिरि फूटता जब ताप होता है पृथ्वी में,
कड़कती दामिनी विकराल धूमाकुल गगन में।

महाभारत के कारणों पर प्रकाश डालते हुए पितामह युधिष्ठिर को कह रहे हैं :

कहीं था जल रहा कोई किसी की शूरता में,
कहीं था क्षोभ में कोई किसी की क्रूरता में,
कहीं उत्कर्ष ही नृप का नृपों को सालता था,
कहीं प्रतिशोद्ध का कोई भुजंगम पालता था,
निभाना पार्थवध का चाहता राधेय था प्रण,
द्रुपद था चाहता गुरू द्रोण से निज वैर शोधन,
शकुनि को चाह थी कैसे चुकाये ऋण पिता का,
मिला दे धूल में किस भांति कुरूकुल की पताका,
जहां भी आग थी वैसी सुलगती जा रही थी,
समर में फूट पड़ने के लिए अकुला रही थी।

इस प्रकार गांधारी का युद्ध के लिए योगेश्वर कृष्ण को दोषी ठहराना पूर्ण रूप से अव्यवहारिक था। बहुत से व्यक्ति जहां कर्ण, शकुनि और दुर्योधन की तिकड़ी को युद्ध का जिम्मेदार मानते हैं वहां ऐसे वर्ग की भी कमी नहीं है जो समस्त युद्ध का दायित्व द्रोणाचार्य, कुल गुरू कृपाचार्य और मुख्य रूप से भीष्म पितामह के कन्धों पर ड़ालते हैं। उनके कथन के अनुसार भरे दरवार में द्रोपदी के वस्त्र उतारने का प्रयत्न करना और द्रोणाचार्य एवं पितामह द्वारा चुप्पी साधे रखना धर्म और न्याय के सर्वथा विपरीत था। यदि ये दोनों शूरवीर चाहते तो उसी समय दुर्योधन आदि को जेल की

thearyasamaj.org

सलाखों के पीछे डाल देते लेकिन वे केवल मात्र महाराज धृतराष्ट्र से आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसे देने में पुत्रमोह सामने आ रहा था। पितामह भीष्म कभी भी और किसी भी परिस्थिति में अपने प्रण के अनुसार महाराज धृतराष्ट्र के आदेशों का पूर्ण रूप से पालन करना मुख्य धर्म, कर्म और मर्म मानते थे। भीष्म पितामह की माता सत्यवती ने राजवंश की मर्यादा हेतु पितामह भीष्म से अपने पुत्रों की विधवाओं से शादी करने का अनुरोध किया तो उन्होंने अपने वचनों की रक्षा हेतु मां के आदेश को भी स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। परिणामस्वरूप लाचार माता को इस हेतु अपने बड़े बेटे वेद व्यास से वंश की रक्षा हेतु अनुरोध करना पड़ा। भीष्म पितामह का जीवन अनुकरणीय, अविस्मरणीय, शक्ति और साहस का कुन्ज रहा है। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए किसी भी प्रलोभन के आगे घुटना टेक नीति नहीं अपनाई। इस प्रकार वे इतिहास के पन्नों में सदा और सर्वदा के लिए कोहेनूर हीरे की तरह चमचमाते रहेंगे और दूसरों को भी प्रकाशित करते रहेंगे। पितामह भीष्म के आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा और अपने पिता शांतनु के शोक को दूर करने की प्रतिज्ञा सदा और सर्वदा स्वर्ण अक्षरों में लिखी जायेगी। अपने प्राण पंखेरू त्यागने से पूर्व रोते बिलखते पांडवों का सहानुभूति और सांत्वना देते हुए उन्होंने अपने अमृत उपदेश की वर्षा करते हुए केवल मात्र यही कहा कि जीवन में चाहे सुख आये या दुख आये, प्रिय घटना घटित हो या अप्रिय घटना घटित हो, इस सभी को उस महान् शक्ति का आदेश समझें और किसी भी परिस्थिति में अपने हृदय को पराजित न होने दें। यही क्षत्रिय जीवन का सबसे कर्म, धर्म और मर्म है।

समाचार

दिनाकं २६ सितम्बर, २०१४ मंगत राम चौधरी की अध्यक्षता में बल्ह खण्ड की कार्यकारिणी की बैठक हुई जिसमें संगठन की मजबूती और २०१५–१७ की मेम्बरशिप (सदस्यता) पर विचार विमर्श हुआ। निर्णय हुआ कि २०१५–२०१७ की सदस्यता अविलम्ब आरम्भ की जाये। इस पूर्व बैठक में सर्वश्री कृष्ण चन्द आर्य प्रदेश संरक्षक, महासचिव भगतराम आजाद, जिला उपाध्यक्ष लालमन शर्मा, जिला सलाहकार खेम चन्द ठाकुर, खण्ड प्रधान मंगत राम चौधरी, उपप्रधान देवी सिंह सैनी, कोषाध्यक्ष ललित कुमार, लेखाकार महेन्द्र पाल, प्रचार मन्त्री मायाराम शर्मा, महासचिव जयराम नायक, चेत राम, अनन्त राम सैनी, चांद राम तथा राम किशन इत्यादि गण्यमान्य पैंशनर शामिल हुए।

—लालमन शर्मा, मुख्य संरक्षक, बल्ह

आर्य वीर पुरोहित एवं कार्यकर्त्ता शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा (हि. प्र.) द्वारा पुरोहित प्रशिक्षण आर्य वीर प्रशिक्षण एवं कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर दिनांक २ अक्तूबर, २०१४ से ५ अक्तूबर, २०१४ तक आर्य समाज मन्दिर सुन्दरनगर, कलौनी (हि. प्र.) में सभा के महामन्त्री श्री रामफल सिंह आर्य जी की अध्यक्षता में लगाया गया।

इस शिविर में आर्य समाज जोगिन्दर नगर, हमीरपुर तथा धर्मशाला सिविल लाईन के प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। वैदिक धर्म के मूल सूत्र, बृहद यज्ञ तथा शुद्ध वेद पाठ का प्रशिक्षण श्री रामफल सिंह आर्य जी द्वारा दिया गया तथा आर्य वीरों को व्यायाम का प्रशिक्षण श्री पवन आर्य, मन्त्री आर्य वीर दल (हि. प्र.) तथा बसन्त सिंह आर्य शिक्षक आर्य वीर दल (हि. प्र.) द्वारा दिया गया। शिविर की दिनचर्या प्रातः ५ बजे से प्रारम्भ होकर रात्रि ६.३० बजे तक चलती थी। शिविरार्थियों ने पूर्ण अनुशासन में रह कर सब कक्षाओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा अपने अनुभव बताते हुए कहा कि उन्हें इस शिविर में आकर आशातीत लाभ हुआ। सभी ने जीवन भर नशों तथा अभक्ष्य पदार्थों से दूर रह कर वैदिक धर्मानुसार संध्या, यज्ञ एवं स्वाध्याय आदि के द्वारा जीवन को शुद्ध पवित्र बनाने एवं आर्य समाज के प्रचार प्रसार का व्रत लेकर निष्ठापूर्वक कार्य करने का आश्वासन दिया।

शिविर को सफल बनाने हेतु आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी के सभी सदस्यों ने सहयोग दिया, जिनमें श्री सत्यप्रकाश शर्मा, शमशेर सिंह, बी. एस. रंगा, श्रवण आर्य, श्रीमती रानी आर्या, सुनीती, बबीता देवी आदि का विशेष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ।

—सत्यप्रकाश शर्मा
मन्त्री आर्य समाज, कालौनी

समाचार

मुझे गत दिवस गुडगांव से श्री सत्य पाल बहल जी का पत्र प्राप्त हुआ। उन्होंने रोष प्रकट करते हुए यह लिखा कि आपने आर्य वन्दना पत्रिका में सुन्दरनगर में आर्य समाज के कर्णधार पंडित केदारनाथ शर्मा के देहांत का समाचार प्रकाशित नहीं किया जो कि अति दुख का विषय है। मैं उनकी सेवा में निवेदन करना चाहता हूँ कि अगस्त मास के आर्य वन्दना के अंक में माननीय केदारनाथ शर्मा के निधन का समाचार प्रकाशित हो चुका है। अतः इस सम्बन्ध में और अधिक जानकारी हेतु यदि वे चाहें तो इन्हें इस मास का अंक पुनः भेज दिया जाएगा।

—सम्पादक

thearyasamaj.org

समाचार

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ जिला मण्डी के चच्योट खंड के अति आवश्यक बैठक ८ अक्तूबर २०१४ को प्रातः ११ बजे बाल गृह चैलचौक में प्रधान श्री रणजीत सिंह की अध्यक्षता में हुई। जिला प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य मुख्य अतिथि थे। इस बैठक में चच्योट खंड के वरिष्ठ सदस्यों को माल्यार्पण तथा टोपी पहना करके प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमरनाथ शर्मा ने सम्मानित किया। उन्होंने अपने ओजस्वी एवं भावुकता पूर्ण भाषण में कहा कि अब हम जीवन की अन्तिम बेला में प्रवेश कर चुके हैं और हमें मिल बैठ कर अपनी सभी समस्याओं का समाधान करना चाहिए। हमें एक दूसरे के प्रति प्यार, आदर और लगाव होना चाहिए। यही हमारी सबसे बड़ी और सच्ची सम्पत्ति है जो आगे तक हमारा साथ देगी। जिला अध्यक्ष कृष्ण चन्द आर्य ने प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर नाथ शर्मा और खंड प्रधान श्री रणजीत सिंह को पैंशनर कल्याण संघ के सूर्य और चांद की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि ये दोनों विभूतियां पैंशनर कल्याण संघ के हितों के बारे में ही चिंतन करती रहती हैं। जिसके परिणाम स्वरूप आज यह संघ हिमाचल प्रदेश के श्रेष्ठतम खंडों में गिना जाता है। इस अवसर पर खंड प्रधान श्री रणजीत सिंह ने सहयोग देने हेतु सभी पैंशनरों का धन्यवाद किया और आने वाले दो साल के चुनावों में अधिकाधिक संख्या में भाग लेने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि संघ किसी भी पैंशनर की कोई भी समस्या का समाधान करने हेतु हमेशा तैयार रहता है। इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्षा लक्ष्मी आर्या ने अपनी वाणी के अमृत वचन रखते हुए कहा कि हमारा दीन–दुखियों के सम्बन्ध में ही चिन्तन होना चाहिए। हम अपने साथ कुछ भी नहीं ले जायेंगे, केवल सुकृत्यों की खेती करते रहना चाहिए, यही हमारा सबसे बड़ा धर्म, कर्म और मर्म है। इस अवसर पर पूर्व थाना प्रभारी श्री जय राम ठाकुर, थाना मुख्य निरीक्षक श्री चन्द्रमणि ठाकुर, प्रैस सचिव श्री बृज लाल ने भी अपने विचार रखे। महिलाओं की ओर से सभी के लिए भोजन की सुन्दर व्यवस्था रखी गई थी जिसमें ८८ सदस्यों ने जलपान किया।

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ जिला मण्डी के बल्ह खंड की मासिक बैठक खंड प्रधान श्री मंगत राम चौधरी की अध्यक्षता में हुई जिसमें जिला प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री लालमन शर्मा मुख्य अतिथि थे। इस बैठक में बल्ह खंड की समस्याओं के बारे में अपने विचार रखे और पैंशनर कल्याण संघ को मजबूत बनाने पर जोर दिया।

•सुन्दरनगर पैंशनर कल्याण संघ के प्रैस सचिव तथा डैहर के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री कलिया राम पण्डयार की कुछ शरारती तत्वों ने धुनाई कर डाली। पुलिस द्वारा इस सम्बन्ध में एफ. आई. आर. दर्ज कर ली गई है। श्री कलिया राम पण्डयार के सिर में चोट लगी है और वे गम्भीर रूप से घायल हैं। हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ के जिला प्रधान अन्य सदस्यों सहित उनसे मिलने गये और उनका कुशल क्षेम पूछा लेकिन वे दिमागी रूप से अस्वस्थ ही चल रहे हैं। हिमाचल सरकार को इस दिशा में आवश्यक और प्रभावशाली कदम उठाने की आवश्यकता है ताकि शरारती एवं अवांछनीय तत्वों पर लगाम लगाई जा सके।

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ जिला मण्डी की कार्यकारिणी की आवश्यक बैठक प्रदेश के मुख्य संरक्षक श्री बी. डी. शर्मा की अध्यक्षता में सुन्दरनगर में हुई। इस बैठक में सभी खंडों के प्रधान एवं अन्य समाजसेवी पैंशनरों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री बेली राम, शम्भू राम, जोगिन्द्रनगर, एम. सी. चौहान प्रधान द्रंग खंड, मंगत राम चौधरी प्रधान, बल्ह खंड, रणजीत सिंह प्रधान, चच्योट, विनोद स्वरूप, महासचिव, सुन्दरनगर, भगत राम आजाद जिला महामन्त्री, रमण कुमार गुप्ता हरिपुर, श्रीमती लक्ष्मी आर्या, प्रदेश उपाध्यक्ष आदि को उनकी संघ के प्रति विशिष्ट सेवाओं के लिए मुख्य संरक्षक बी. डी. शर्मा द्वारा माल्यार्पण करके टोपी और मफलर पहनाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जिला प्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य और सुन्दरनगर खंड के महामन्त्री विनोद स्वरूप ने प्रदेश के मुख्य संरक्षक बी. डी. शर्मा एवं उनके साथियों को शाल पहनाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रदेश के मुख्य संरक्षक बी. डी. शर्मा ने सरकार से अनुरोध किया कि प्रत्येक जिला मुख्यालय में पैंशनरों के बैठने के लिए भवन सरकार अविलम्ब बनाये ताकि बुजुर्ग पैंशनर कुछ समय के लिए वहां बैठ कर आराम की सांस ले सकें। श्री बी. डी. शर्मा ने यह भी कहा कि ६५, ७०, ७५ साल की आयु के वुजुर्गों को सरकार द्वारा ५, १० और १५ प्रतिशत भत्ते को मूल पैंशन में शामिल किया जाये तथा हिमाचल के पैंशनरों को पंजाब आधार पर ५०० रूपये चिकित्सा भत्ता दिया जाये और करूणामूलक आधार पर दिवंगत पैंशनरों के बच्चों को सरकारी सेवा में लिया जाए और प्रदेश में पड़े चिकित्सा बिलों का भुगतान सुनिश्चित किया जाए। इस अवसर पर महिलाओं की ओर से श्रीमती लक्ष्मी आर्या ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बी. डी. शर्मा के नेतृत्व में पैंशनर संघ ने विशेष ख्याति प्राप्त की और मुख्य रूप से वह और उनके सहयोगी हमीरपुर में ४० लाख का भवन बनाने में सफल रहे जो विशेष उपलब्धि है। श्री अमर नाथ शर्मा ने संघ को मजबूत बनाने पर बल दिया। अंत में सभी पैंशनरों ने आर्य समाज खरीहडी (सुन्दरनगर) की ओर से आयोजित सुस्वादु भोजन का आनन्द लिया।

–मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

thearyasamaj.org

दैवी सम्पदा

♦महात्मा आनन्द स्वामी

योगेश्वर कृष्ण के शब्द सुन लो :–

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो
नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत!

और इसके मुकाबले में 'आसुरी सम्पदा' अर्थात् राक्षसोंवाले स्वभाव के लोग कौन हैं ?इस सम्बन्ध में भी भगवान् कृष्ण ने कहा है'

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदामासुरीम्।।

'हे पार्थ! जो लोग पाखण्ड, घमण्ड, अभिमान, क्रोध और कठोर वाणी व अज्ञान के रास्ते को अपनाते हैं, वे 'आसुरी सम्पदा' वाले अर्थात् राक्षस हैं; मनुष्य नहीं बल्कि पशु हैं।'

इन दोनों श्लोकों को वेद भगवान् के शब्द 'सोम' से मिलाइए तो आपको ज्ञात हो जायेगा कि 'सोम' का अर्थ क्या है।

सोम के अर्थ हैं–मिठास, झुक जाना, नम्रता आपके यहाँ भी कई दुकानदार होंगे। वे तराजू का प्रयोग भी करते होंगे। जो पलड़ा भारी हो वह झुक जाता है, जो हल्का हो वह ऊपर उठ जाता है। ऐसे ही जिसमें आध्यत्मिकता का गुण हो वह झुकता है, जिसमें यह गुण न हो वह अकड़कर ऊपर हो जाता है।

परन्तु सुनो! अकड़ने से कुछ बनता नहीं, छोटा बनकर ही मनुष्य बड़ा काम करता है।

मिसरी बिखरी रेत में, हाथी चुनी न जाय।
कीड़ी होकर सब चुने, यूँ साहिब को पाय।।

'खाँड बिखर गई रेत में। हाथी बहुत' बड़ा है वह तो उसे रेत से निकाल नहीं सकता। छोटी–से–छोटी चींटी उसे निकाल लेती है। शरीर के बड़ा होने से कोई बड़ा नहीं होता। अकड़ने और अभिमान करने से भी कोई बड़ा नहीं होता। आदमी बड़ा होता है नम्रता से, दूसरों की कमजोरियों की उपेक्षा कर देने, क्षमा कर देने से, सबका मान करने से, सबके साथ मीठा बोलने से :–

निम्न क्षिमन और दीनता, सब सों आदर–भाव।
कहे कबीर सो ही बड़ा, जामें बड़ा स्वभाव।।

अकड़ने से, अभिमान से, घमण्ड से कुछ होता नहीं। नम्रता, सरलता, सादगी, वाणी की मिठास, प्रसन्न स्वभाव, सबके साथ आदर से बोलना, सबसे प्यार की बात कहना, दूसरों की त्रुटियों की उपेक्षा कर देना, गालियाँ मिलने पर भी दूसरों को क्षमा कर देना, किसी के साथ शत्रुता न करना, इनसे ही मनुष्य बड़ा होता है। ये बहुत बड़े गुण हैं, ये आध्यत्मिकता की दौलत हैं, यही 'दैवी सम्पदा' है।

कुश

अंशू

गत दिनों खरीहड़ी मुहल्ले में लगातार तीन–चार दिनों में कुश शर्मा सुपुत्र श्री दयालु राम शास्त्री एवं श्रीमती विनोद शर्मा और अंशू कुमार सुपुत्र श्री जितेन्द्र एवं श्रीमती सुनीता ने तीन फनिहर सांपों को पकड़ कर जंगल में छोड़ दिया। नगर निवासियों ने दोनों बालकों की बहादुरी की सराहना की। आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग खरीहडी के प्रधान सहायक प्रोफैसर श्रीमती अर्चना ने इन दोनों बालकों को वन्य प्राणियों पर दया दर्शाने हेतु आर्य समाज की ओर दीवाली के शुभ अवसर पर पुरस्कृत करने की घोषणा की।

साभार

श्रीमती लीला नरूला एवं श्री बी. आर. नरूला

श्रीमती एवं श्री दीनानाथ परमार, पूर्व प्रिंसीपल, गांव नौलखा, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी ने ₹ २५००, श्री चुनी लाल, विद्युत विभाग, गांव नौलखा, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी ने ₹ १०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000

Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

सेवा में

बुक पोस्ट

हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ जिला मण्डी की बैठक आर्य समाज खरीहडी (सुन्दरनगर) में श्री बी. डी. शर्मा द्वारा सम्मानित पैंशनरों के चित्र